डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 अक्टूबर 2010 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - आठवां | अंक-छठा | अक्टूबर-2010 | मासिक पत्रिका

5 **भजनों के प्रति प्यार**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजनों के बारे में संदेश

7 **इंसानी जामें की कीमत**
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज , फ्रांस

19 **गुरु का बच्चा**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब, साँपला

31 **प्रेम-विरह**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन
16 पी. एस. आश्रम (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 09950 55 66 71 (राजस्थान) व 09871 50 19 99 (दिल्ली)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-09928 92 53 04 व 09667 23 33 04
उप सम्पादिका : नंदिनी
सहयोग : रेनू सचदेवा, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्रीगंगा नगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 103 | Website : www.ajaibbani.org

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजनों के बारे में संदेश

भजनों के प्रति प्यार

मैं जानता हूँ कि पंजाबी आप सबकी भाषा नहीं है ज्यादातर भजन पंजाबी भाषा में हैं। प्रेमी भजन गाने के लिए अलग-अलग तरीके से अभ्यास करते हैं अगर कोई प्रेमी भजन गाता है जिसका आपने अभ्यास न किया हो तो आपको उदास नहीं होना चाहिए।

ये भजन परमपिता कृपाल के यश और बड़ाई में लिखे गए हैं। आपमें से कई प्रेमियों ने महाराज कृपाल के दर्शन भी किए हैं। यह गरीब आत्मा बचपन से ही शारीरिक रूप में मिलने से पहले आपके गुण गा रही थी, बड़ाई लिख रही थी। जब आप इस गरीब आत्मा से मिले तबसे यह आत्मा आपका यश और प्रशंसा लिखती ही रही।

दुनियावी लोगों द्वारा लिखे जाने वाले गीत और परम सन्तों द्वारा लिखे गए भजनों में जमीन-आसमान जितना फर्क होता है। दुनियावी लोग मन और बुद्धि के हिसाब के अपनी कविताएं लिखते हैं जबकि पूर्ण गुरुओं द्वारा लिखे गए भजन सच्चखंड से आते हैं।

परम सन्त अपने गुरु के आगे खड़े होकर भजन गाते हैं। परम सन्तों के लिखे भजनों को गाने से न केवल आत्मा को ठंडक पहुँचती है बल्कि मन भी मस्त होता है। परम सन्त सच्चखंड पहुँचकर परमात्मा-गुरु के आगे खड़े होकर अपने आपको नीच औगुणहारा बयान करते हैं। सन्तों के भजनों को प्यार, श्रद्धा और एकाग्र मन से गाने पर आत्मा को ठंडक पहुँचती है।

कहा जाता है कि अठारह मील के बाद लोगों की भाषा और पहनावा बदल जाता है। पुराने जमाने में लिखे गए भजनों को समझना मुश्किल है लेकिन ये भजन आजकल की भाषा में लिखे गए हैं इसलिए

प्रेमियों के समझने के लिए आसान हैं। जब हमारे अंदर गुरु का यश गाने की आदत बन जाती है तो हमारे अंदर गुरु के लिए प्यार और भरोसा पैदा हो जाता है।

सच्चखंड पहुँचे परम सन्त अपने गुरु के आगे खड़े होकर अपने आपको गरीब नीच और पापों से भरा हुआ कहते हैं। वे जानते हैं कि गुरु के आगे वे पापी के सिवाय कुछ नहीं। गुरु ही उनके पापों को माफ कर सकता है और सच्चखंड का वासी बना सकता है।

वही पूर्ण शिष्य है जिस पर गुरु दया करे, उसे सच्चखंड का वासी बनाए। आज नहीं तो कल यह आत्मा सच्चखंड जरूर जाएगी। ऐसी कोई ताकत नहीं जो इसे सच्चखंड जाने से रोक सके।

मैं परमपिता कृपाल का धन्यवादी हूँ। यह आपकी दया है कि आपने अपने मिलने से पहले मुझसे अपना यश करवाया। आपने शारीरिक रूप में मिलकर मुझे आर्शिवाद दिया और मुझसे ये भजन लिखवाते रहे। मैं अब भी जो लिख रहा हूँ या कह रहा हूँ यह सब आपकी ही दया है। आप ही मुझसे ये सब करवा रहे हैं जिससे मेरे बच्चों को पता चला कि गुरु के लिए प्रेम और धन्यवाद किस तरह किया जा सकता है। गुरु के लिए अपने दिल में प्रेम और श्रद्धा पैदा करके हमारे अंदर सच्ची नम्रता आती है।

मैं सतसंग इस भावना से नहीं करता कि मुझे बहुत कुछ कहना है। मैं जब भी सतसंग के लिए बैठता हूँ जितना हो सके मैं अपने गुरु का यश गाने की कोशिश करता हूँ। जब हम गुरु का ज्यादा से ज्यादा यश गाऐंगे तब वह हमारे लिए अपना दरवाजा खोल देगा।

मैं अपने भजनों में यही दिखाना चाहता हूँ कि कृपाल कौन था? वह इस संसार में क्यों आया था? वह हमें क्या देना चाहता था? मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि सच्चे शिष्य इस दुनियां को बुरी चीज़ नहीं समझते और गुरु के लिए सारी दुनियां को त्यागने में भी नहीं झिझकते।

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

इंसानी जामें की कीमत

कबीर साहब की बानी

फ़्रांस

कोई भी शिष्य शरीर में रहते हुए सन्त-सतगुरु की शक्ति और महानता का अंदाजा नहीं लगा सकता जब तक वह अंदर जाकर नूरी स्वरूप को प्रकट नहीं कर लेता। कबीर साहब कहते हैं, ''जब तक मैंने गुरु को 'शब्द-रूप' में अंदर प्रकट नहीं किया था मैं तब तक ही गाता था लेकिन जब अंदर जाकर दर्शन किए तो पता लगा कि गुरु की उपमा करनी असंभव है।''

शारीरिक रूप में सन्त-सतगुरु संसार में कछुए की तरह रहते हैं। जिस तरह कछुआ अपनी टाँगे, बाजू और मुँह को अपने जिस्म में समेटकर रखता है जरूरत पड़ने पर ही उनका सहारा लेकर चलता है। मैं हमेशा सतसंग शुरु करने से पहले परमात्मा सावन-कृपाल का धन्यवाद कहा करता हूँ। यह सिर्फ दुनियावी लफ्ज़ हैं हम सच्चा धन्यवाद अंदर जाकर गुरु के नूरी स्वरूप को प्रकट करके ही कर सकते हैं।

मुझे परमात्मा सावन का बचपन में ही दर्शन हुआ, यह आपकी ही दया थी। आपका सरल स्वभाव वाला भोला-भाला चेहरा जिसमें कोई मिलावट नहीं थी। आपका नूरी स्वरूप मेरी आँखों में इस तरह समाया जो मेरी जिंदगी की खुराक बन गया; जिसे मैं अपनी ज़िंदगी में आँखों से ओझल नहीं कर सकता। आपके आगे कबीर साहब का शब्द रखा जा रहा है आप इस छोटे से शब्द में **इंसानी जामें की कीमत** समझा रहे हैं।

मानत नहिं मन मोरा साधो, मानत नहिं मन मोरा रे।

संसार में ऐसी कोई ताकत नहीं जिसे इंसान ने अपने बस में न किया हो। इंसान ने हाथी, चीते, शेर और कई मुल्कों को भी अपने

बस में किया है। इंसान ने सारी दुनियां को अपना करने में भी जीत हासिल की। बड़े-बड़े तानाशाह भी इस संसार में आए लेकिन आज तक मन को कोई नहीं जीत पाया।

कबीर साहब कहते हैं, ''यह मन बिना सिर का चोर है इसे जीतना मुश्किल है। ऋषियों-मुनियों की कथाओं से पुराण भरे पड़े हैं। उन्होंने मन को वश में करने की बहुत कोशिशें की। किसी ने शरीर पर भगवे कपड़े पहने, कोई कान फड़वाकर योगी बन गया, कोई पहाड़ों की बर्फ में जाकर गल गया, किसी ने एक अंगूठे पर खड़े होकर भारी तपस्या की, किसी ने खाना छोड़ दिया लेकिन जब मन का दाव चला तो मन ने उनकी हालत दुनियादारों से भी भद्दी कर दी।''

शरीर रूपी किले में दाखिल होने से पहले मन ने *काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार* जैसे बड़े जबरदस्त पाँच पहरेदार बिठा रखे हैं। *काम* - हमें नीचे गिरा देता है। *क्रोध* - हमारे ख्याल को बाहर फैला देता है। *लोभ* - हमें संसार के पदार्थ इकट्ठे करने में लगा देता है। *मोह* - हमें संसार के साथ बाँध देता है। *अहंकार* - हमें परमात्मा से दूर ले जाता है। तुलसी साहब कहते हैं:

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार की जब लग घट में खान,
क्या पंडित क्या मूर्खा दोनों एक समान।

अगर हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के शिकार हैं और और हमारे मन को शान्ति नहीं आई तो पढ़-पढ़ाकर किसी को उपदेश देने का क्या फायदा? जिसका अपना पर्दा नहीं खुला वह दूसरे का पर्दा खोलने में मदद नहीं कर सकता। जो खुद अनपढ़ है वह दूसरे को नहीं पढ़ा सकता। जिसका अपना हृदय इन पाँच डाकुओं की आग में जल रहा है वह दूसरे की आग किस तरह बुझा सकता है?

सन्त-महात्मा संसार में मन को बस में करने की दवाई देने के लिए ही आते हैं। परमात्मा ने उन्हें जिन आत्माओं के लिए भेजा होता है वे उन्हें 'नाम' देकर समझाकर परमात्मा के साथ मिला देते हैं।

सन्त-महात्मा एक बिचौलिये का काम करते हैं। अंधा इंसान सुनसान और कँटीली झाड़ियों के बीच किसी को रास्ता नहीं दिखा सकता?

आप प्यार से कहते हैं कि ऐसा नहीं है कि आज तक किसी ने मन को बस में नहीं किया। मन की प्रकृति के बारे में सोचना पड़ता है कि मन किस चीज का आशिक है? मन के ऊपर संगत का बड़ा जबरदस्त प्रभाव पड़ता है हम जैसी संगत करते हैं वैसी रंगत हो जाती है। मन स्वाद का आशिक है; यह दुनियां के स्वाद के लिए दिन-रात तड़फता रहता है। एक लज्जत को छोड़ता है दूसरी के पीछे दौड़ता है दूसरी लज्जत को छोड़ता है तो तीसरी के पीछे दौड़ता है।

सन्त-महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि मन को बस में करने के लिए घर-बार, बाल-बच्चे छोड़ने की जरूरत नहीं है न जिस्म पर भस्म लगाने की जरूरत है और न ही किसी बाहरी रीति-रिवाज और कर्मकांड करने की कोई जरूरत है। पूरे महात्मा द्वारा दिए हुए सिमरन को करने से जब हम आँखों के पीछे आ जाते हैं हमारे अंदर वह नूरी-स्वरूप प्रकट हो जाता है जो सदा ही शिष्य की अगुवाही करता है। 'नामदान' के समय सतगुरु अपना नूरी-स्वरूप और 'शब्द' सेवक के अंदर रख देता है। जब तक शिष्य इस संसार में है वह उसका साथ नहीं छोड़ता। वहीं शिष्य कहलवा सकता है जिसने नूरी स्वरूप को अपने अंदर प्रकट कर लिया हो।

पूर्ण सन्त चन्दन की तरह हैं जैसे चन्दन के आस-पास के पेड़ो से भी चंदन की खुशबू आने लग जाती है। वहाँ की मिट्टी तक महक उठती है। इसी तरह जो सेवक पूर्ण सन्त की शरण में आते हैं वे भी 'शब्द-नाम' की कमाई करने लग जाते हैं। पूर्ण सन्त, विषयों से न्यारा होता है। वह खुद 'शब्द-नाम' का अमृत पीता है और अपने सेवकों को भी शब्द-नाम का अमृत पीने की युक्ति बताता है। जो शिष्य 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं उनका हिरन की तरह बाहर भटकने वाला मन स्थिर और तृप्त हो जाता है। गुरु रामदास जी कहते हैं:

घर ही में अमृत भरपूर है, मनमुखा साध ना पाया,
ज्यों कस्तूरी मृग ना जाणें, ओ भरम दा भरमाया।

कबीर साहब कहते हैं, ''पहले मन हमें वनों में ले जाता है फिर यही मन वनों से घर ले आता है। मन ही हमें त्यागी बनाकर वैराग पैदा करता है फिर मन ही हमें दुनियादार बना देता है।''

मन दे मारे वन गए, वन तज बस्ती माहें,
कहे कबीर मन ले गया लख चौरासी माहें।

मानत नहिं मन मोरा साधो, मानत नहिं मन मोरा रे।
बार बार मैं कहि समुझावौं, जग में जीवन थोरा रे।।

जो बना है उसे टूटना है। जो पैदा हुआ है उसे मरना है। संसार एक स्वप्न की तरह है हम जो स्वप्न देखते हैं वह सच प्रतीत होता है। स्वप्न थोड़े समय के लिए होता है लेकिन जब आँख खुलती है तो वहाँ कुछ भी नहीं होता। जिंदगी दस, बीस, पचास, साठ, सौ साल की है। हमें हमेशा मौत का डर लगा रहता है कि पता नहीं मौत के समय क्या होगा? फिर कहाँ जाकर जन्म लेना पड़ेगा कैसी हालत होगी? लेकिन गुरु के शिष्य को मौत का डर नहीं रहता क्योंकि वह हर रोज मौत की घाटी से गुजरता है, उसने जीते जी यह अभ्यास किया होता है।

मौत अटल है यह किसी दवाई या किसी उपाय से नहीं टाली जा सकती। जिंदगी छोटी है सफर लम्बा है। हमें हमेशा **इंसानी जामें की कीमत** के बारे में सोचना चाहिए और सफर की तैयारी करनी चाहिए।

या काया कौ गर्ब न कीजै, क्या सांवर क्या गोरा रे।

कबीर साहब कहते हैं कि आप इंसान का जामा पाकर अहंकार न करें कि हम सुंदर हैं दूसरा सुंदर नहीं। हम धनी हैं दूसरा गरीब है। हम ज्यादा पढ़-लिखे हैं दूसरा कम पढ़ा है। इस तन की क्या विशेषता है? हम जानते हैं कि जब बचपन नहीं रहा, जवानी भी नहीं रहेगी। जवानी नहीं रही तो बुढ़ापा भी नहीं रहेगा। अस्पतालों में मरीजों की

हालत देखते हैं दो दिन बुखार चढ़ जाए तो चेहरा पीला पड़ जाता है, चलने के लिए दूसरे का सहारा लेना पड़ता है। जो शरीर मृग की तरह छलांगे लगाता था वह चारपाई पर हिल-डुल भी नहीं सकता। अपने हाथ से पानी भी नहीं पी सकता, दूसरे का सहारा ढूंढता है। कबीर साहब कहते हैंः

यह तन कागज की पुड़िया, बूँद पड़त गल जाओगे,
कहत कबीर सुनो भई साधो, ईक नाम बिना पछताओगे।

आपने इस शरीर की तुलना कागज की पुड़िया से की है जिस तरह कागज की पुड़िया पर पानी पड़ जाए तो वह गल जाती है इसी तरह या तो यह शरीर बीमारी के कारण कमजोर हो जाएगा या मौत आकर गला दबा देगी।

बिना भक्ति तन काम ना आवै, कोट सुगन्धि चभारा रे।।

कबीर साहब कहते हैं, ''नाम के बिना यह इंसानी जामा किसी भी लेखे में नहीं है। हमारे रिश्तेदार, भाई-बहन शरीर होने की वजह से हमारे साथ बहुत प्यार करते हैं, उनके अंदर बहुत जोश होता है। जैसे-जैसे बुढ़ापा आता है उनका जोश और प्यार भी कम हो जाता है कोई बात तक नहीं पूछता।'' गुरु तेग बहादुर जी कहते हैंः

जगत में झूठी देखी प्रीत, अपने हित स्यों सब लागे क्या दारा क्या मीत,
मेरो मेरो सभो कहत हैं हित स्यों बांधयो चीत,
अन्तकाल संगी ना कोई यह अचरज है रीत,
नानक भौजल पार पऐ जे गाऐ प्रभु के गीत।

बाबा बिशनदास जी प्यार में कभी-कभी एक दिलचस्प कहानी सुनाया करते थे। एक महात्मा का एक नौजवान सेवक था। वह नियम से रोजाना सेवा करके अन्न-पानी खाता था। जैसे कि हमारे रीति-रिवाज है उस सेवक की सगाई हो गई, वह उसी में मस्त हो गया। वह सेवक बहुत समय बाद महात्मा के पास आया। उसने महात्मा को बताया कि मेरी सगाई हो गई है। महात्मा ने कहा, ''अब तू यारों-

दोस्तों के काम से गया।'' कुछ समय बाद उसने आकर कहा कि मेरी शादी हो गई है। महात्मा ने कहा, ''अब तू अपने काम से भी गया।''

बहुत समय बाद वह सेवक महात्मा के पास आया। महात्मा ने पूछा, ''क्या बात है अब तू सतसंग में भी हाजरी नहीं लगाता।'' सेवक ने कहा मेरी बीवी मुझसे बहुत प्यार करती है मेरे बिना खाना नहीं खाती वह मेरे बिना जी ही नहीं सकती। महात्मा ने उस सेवक को समझाने के लिए कहा कि हम तुझे एक किस्म की दवाई देते हैं। घर जाकर इस दवाई को खा लेना तुझे कुछ समय के लिए नींद आ जाएगी।

सेवक ने उसी तरह घर जाकर वह दवाई खा ली और लेट गया। वह कुछ समय के लिए बेहोश हो गया। घर के लोगों ने डॉक्टर को बुलवाया डॉक्टर ने जवाब दे दिया कि मेरे पास इसका कोई इलाज नहीं यह मर चुका है। घर के लोगों ने सोचा! यह जिस महात्मा के पास जाता था उन्हें खबर करें।

आखिर घर के लोग उस महात्मा के पास गए और महात्मा को बताया कि आपका सेवक शरीर छोड़ गया है, आप चलकर उसकी दवाई करें या कोई मंत्र पढ़ें। महात्मा ने कहा मैं आपके साथ चलता हूँ। महात्मा उनके घर आए और कहा, ''आप एक बर्तन में पानी ले आऐं मैं उस पानी पर मंत्र पढ़ देता हूँ जो उस पानी को पीऐगा उसकी मौत हो जाएगी और यह जिंदा हो जाएगा।''

जब महात्मा ने ऐसी शर्त रखी तो जो माँ रोज यह कहती थी कि बेटा! तेरे बिना गुजारा नहीं होता तू मेरी आँखों की रोशनी है वह भी जवाब दे गई। पिता, भाई-बहन, रिश्तेदार सब जवाब दे गए। फिर जिस पत्नी की वह इतनी तारीफ करता था, उससे कहा कि तेरा सुहाग जा रहा है, तू यह पानी पी ले। वह कहने लगी जब मैं ही नहीं रहूँगी तो सुहाग का क्या फायदा? वह भी पानी पीने से जवाब दे गई।

महात्मा ने कहा अगर आपमें से कोई यह पानी पी लेता तो यह बच्चा बच जाता? जब कोई यह पानी नहीं पी रहा तो यह कैसे बचेगा? इसलिए हमारी एक-दूसरे के लिए सिर्फ प्यार की कहानियाँ ही होती हैं। कोई किसी के साथ जाने के लिए तैयार नहीं होता। पप्पू को तो इस बात का बहुत तर्जुबा है। कबीर साहब कहते हैंः

घर की नार बहुत हित जास्यो सदा रहे संग लागी,
जब ही हँस तजि यह काया भूत-भूत कर भागी।

सन्त-महात्माओं ने किसी भी औरत को बेवफा नहीं कहा। औरत की इज्जत मर्द के बराबर ही रखी है। यह समझने की बात है कि आत्मा को स्त्री और परमात्मा को पति कहकर ब्यान किया है। कहीं दिल में यह ख्याल हो! जब परमात्मा शब्द की किरण बीच में से उठा लेता है तो औरत ही भूत नहीं कहती। मर्द में भी इतनी ही मौहब्बत होती है जितने दिन शरीर है मर्द नजदीक रहता है जब हँस शरीर छोड़ जाता है तो मर्द की भी यही हालत है।

मैं देखता रहा हूँ, मेरी माता काफी भक्ति-भाव वाली थी। सेवा भाव उसे विरासत में ही मिला था, उसने मेरे पिता की बहुत सेवा की। मैंने कई बार देखा जब मेरे पिता बीमार होते तो मेरी माता सारी-सारी रात उनके पैर दबाती रहती लेकिन जब कभी मेरी माता को जुकाम भी लग जाता तो मेरे पिता जी उसकी खबर भी नहीं लेते थे और कहते मुझे बदबू आती है। प्यारेयो! कहीं दिल में यह ख्याल हो कि औरतें बेवफा हैं या औरतें ही दिखावे का रोती है। मर्द भी ऐसे हैं। सन्तों की बानी सबके लिए एक समान है।

सन्तों की बानी लिखने का इतना ही मतलब होता है कि उसे पढ़कर हमारे अंदर नाम जपने का शौक और तड़प पैदा हो हम संसार की असलियत को समझ सकें। परमात्मा ने हमें **इंसानी जामा** दिया है इसमें बैठकर परमात्मा की भक्ति करके उसके साथ मिलाप कर लें।

सन्त निजी अनुभव के स्वामी होते हैं, वे हर एक के अंदर परमात्मा का नूर देखते हैं हर आत्मा का सत्कार करते हैं, सबको अपने से ऊँचा समझते हैं। उन्हें हर एक के अंदर अपने गुरुदेव का नूर दिखता है।

या माया जनि देख रे भूलौ, क्या हाथी क्या घोड़ा रे।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर परमात्मा ने मेहर करके हमें संसार के अच्छे सुख, अच्छी औलाद, धन-पदार्थ और आने-जाने के साधन दिए हैं तो आप उन पर मस्त न हों। यह सब देने वाले परमात्मा के साथ प्यार करें परमात्मा की भक्ति करें ताकि वह खुश होकर हम पर और भी दया मेहर करे। हमारी यह हालत है अगर कर्मों की वजह से थोड़ा बहुत दुख आ जाता है तो हम रोना-चिल्लाना शुरू कर देते हैं और परमात्मा में नुख्स निकालना शुरू कर देते हैं।''

अच्छे कर्मों की वजह से अगर परमात्मा हमें धन-पदार्थ देता है तो हम अहंकार से फूले नहीं समाते सोचते हैं! ये सब कुछ हमारी अक्ल से ही हुआ है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

ज्यों सौंपे सो विपत है, विध्न रिचे सो होए।

हमें सुख-दुख हमारे कर्मों के मुताबिक ही मिलता है। हमें सुख-दुख दोनों में ही परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए ताकि हमारी आत्मा में मजबूती आए और हम उस दुख को बर्दाशत कर सकें।

जोरि जोरि धन बहुत बिगूचे, लाखन कोटि करोरा रे।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''हम धन जोड़-जोड़कर न अपने ऊपर खर्च करते हैं और न साधु-संगत पर खर्च करते हैं। लाखों-करोड़ो रूपये जोड़कर धन बैंको में रख जाते हैं या ये धन बीमारियों, डाक्टर की फीसों पर लग जाता है।'' एक महात्मा का कहना हैः

चूहा खोद-खोदकर अपना, सुंदर खेड बनाया ई,
बनी बनाई सर्प सांभ ली, चूहा देख भगाया ई,
बड़े जतन कर सूम जोड़दा माया ई,
आके चोर करे धन चोरी, सूम बड़ा घबराया ई।

दुविधा दुरमति ओ चतुराई, जनम गयौ नर बौरा रे।।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर आपने भक्ति में कामयाब होना है, शब्द गुरु को अपने अंदर प्रकट करना है तो सबसे पहले दुविधा छोड़ दें। जब तक हमें गुरु पर भरोसा नहीं हमारा अंदर का रास्ता नहीं चल सकता, हम अंदर नहीं जा सकते।''

हमारा मन दिन-रात हमें दुनियां में फँसाने के लिए गलत सलाह देता है। बुरी संगत छोड़कर अच्छी संगत में जाएं। यह दुनियां विषय-विकारों का जंगल है आप क्यों पागलों की तरह भटकते फिर रहे हैं!

अजहूँ आनि मिलौ सत संगत, सतगुरु मान निहोरा रे।।

कबीर साहब कहते हैं, ''आप सोचते ही न रहें कि छह महीने बाद या साल बाद सतसंग में जाएंगे। आपको जब भी मौका मिले साधु की संगत में जाएं।'' सन्त हमें सतसंग में समझाते हैं कि देख प्यारेया!

इंसानी जामें की कीमत को समझ। बुरी संगत के कारण तूने कितने जन्मों में कष्ट भोगे हैं। अब तू सच्ची संगत में अपना समय लगा। महात्मा की संगत के बिना हमारा बचाव नहीं हो सकता।

परमात्मा कृपाल सदा ही कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हजार काम छोड़कर भजन में बैठ जाएं। जब तक आप अपनी आत्मा को खुराक नहीं दे लेते तब तक तन को खुराक न दें। हमारी आत्मा जन्मों-जन्मों से भूखी है इसकी खुराक शब्द-नाम की कमाई है।'' कबीर साहब कहते हैं:

यम का ठैंगा बुरा है, वह नहीं सहा जाये,
एक जो साधु मोहे मिलया, तिन्हो लिया बचाये,
कबीरा घाणी पीड़दे, सतगुरु लये बचाये,
परा पुरवली भावनी, ते प्रगट होई आये।

लेत उठाइ परत भुइं गिरि गिरि, ज्यों बालक बिन कोरा रे।

आप कहते हैं, ''जिस तरह माता गंदगी में लिपटे हुए बच्चे को साफ करके अपनी गोदी में उठा लेती है। उसी तरह सन्त-महात्मा हम भूले-भटके जीवों को सतसंग के जरिए हमारी गलतियां बताकर हमें ऊपर उठाते हैं। हम चाहे कितने भी विषय-विकारों और दुनियां की मैलों में फँसे हों फिर भी गुरु दर्शनों के जरिए, सतसंगों के जरिए हमारे अंदर अभ्यास की तड़फ पैदा करता है।''

कहैं कबीर चरन चित राखो, ज्यों सूई बिच डोरा रे।।

कबीर साहब कहते हैं, ''आप सतगुरु के दिए हुए सिमरन को अपने अंदर इस तरह पिरो लें जिस तरह सूई में डाला हुआ धागा नहीं निकलता। चलते-फिरते, सोते-जागते सिमरन आपकी जुबान पर चढ़ जाना चाहिए। सिमरन सिर्फ जुबान से करने के लिए नहीं होता इसे मन के साथ करना चाहिए।'' हजरत बाहु कहते हैं:

जुबानी कलमा हर कोई आखे, दिल दा पढ़दा कोई हू,
जित्थे कलमा दिल दा पढ़दे, ओत्थे जेबा मिले ना ढोई हू।

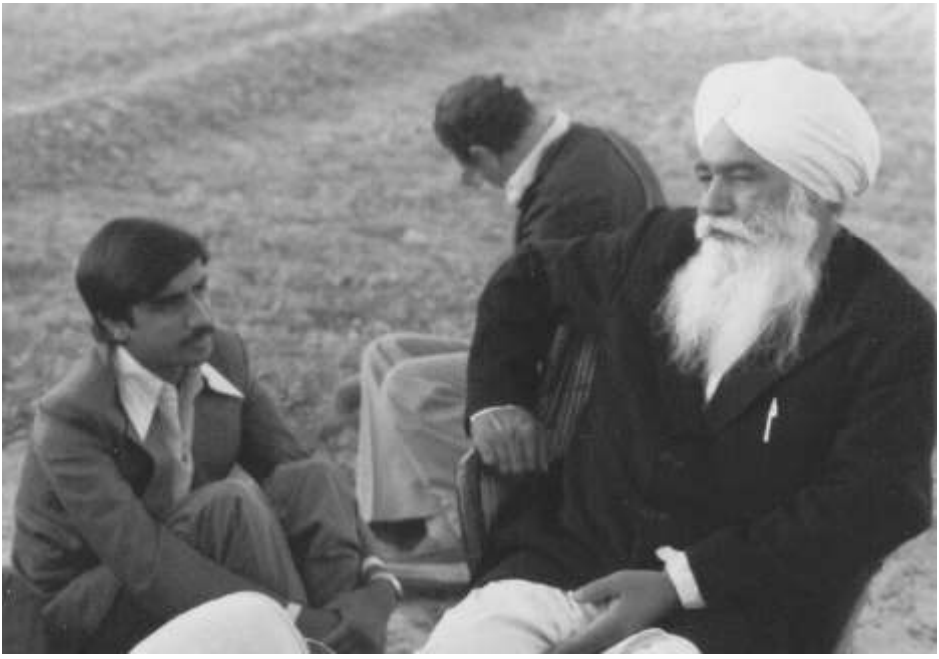

असली नमाजी वही है सिमरन करते हुए जिसकी न जुबान हिले न होठ हिलें।

कबीर साहब ने इस छोटे से शब्द में हमें बताया कि किस तरह मन को 'शब्द-नाम' के रस के साथ जोड़कर हम अपने घर पहुँच सकते हैं। मन ब्रह्म की अंश है त्रिकुटी का रहने वाला है हम जब तक इसे ब्रह्म तक नहीं ले जाते तब तक मन के दावपेचों से नहीं बच सकते। जब हम मन को इसके घर ब्रह्म में ले जाते हैं तब यह शान्ति से टिक जाता है, मन आत्मा की बंधी गाँठ खुल जाती है। आत्मा मन के पंजे से आजाद होकर अपने घर पहुँच जाती है।

कबीर साहब ने बड़े प्यार से चेतावनी दी है कि आप **इंसानी जामें की कीमत** को समझें; आपको जो समय मिला है उसे संगत में लगाएं। आलस न करें, आपको जो कल करना है आज करें जो आज करना है वह अब करें। हम नहीं जानते कि वह समय कब आ जाएगा जब हमें ये सब कुछ छोड़कर जाना पड़ेगा?

गुरु का बच्चा

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी भक्ति करने का तोहफा दिया है। कबीर साहब कहते हैं, ''जो शिष्य हमेशा गुरु को अपने सिर पर रखता है और गुरु का कहना मानता है उसे त्रिलोकी तक डरने की जरूरत नहीं।''

अगर शिष्य प्यार और श्रद्धा से गुरु का कहना मानता है तो उसे काल की शक्तियों की परवाह करने की जरूरत नहीं। जिस शिष्य के साथ गुरु होता है उसे काल की कोई भी शक्ति परेशान नहीं करती। जब हम शरीर की चेतना से ऊपर उठकर आँखों के पीछे आते हैं, गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं उसके बाद गुरु परछाई की तरह हमारे साथ रहता है; हमें एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ता।

एक प्रेमी : गुरु का बच्चा बनने के लिए क्या करना चाहिए?

बाबा जी : यह बहुत ही दिलचस्प सवाल है। इस सवाल को सुनकर मेरा चेहरा ही नहीं मुस्कुरा रहा बल्कि मेरा दिल बहुत खुश है। इस सवाल के बारे में मैं आपको बहुत कुछ कह सकता हूँ लेकिन मैं आपको अपने अनुभव के मुताबिक कुछ शब्द ही कहूँगा कि **गुरु का बच्चा** बनने के लिए हमें अपनी चतुराई और अपने ऐब छोड़ने होंगे।

गुरु का बच्चा बनने के लिए एम.ए. पास को चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। **गुरु का बच्चा** बनने के लिए पवित्रता चाहिए। उसका मन पवित्र होना चाहिए, उसकी कमाई पवित्र होनी चाहिए। मैंने पहले भी कई बार बताया है कि ऐसी आत्माएं पहले से ही तैयार होकर इस संसार में आती हैं। बचपन से ही उनके अंदर उस प्यार की इच्छा होती है। वह प्यार बाजार से खरीदा नहीं जा सकता, खेतों में उगाया नहीं जा सकता।

मैंने इस बारे में कई बार पहले भी आपको बताया है एक बार फिर आपको याद करवा रहा हूँ। अपने अनुभव के बारे में बताना ही अच्छा होता है। मैंने सच्चे दिल से उसे अपना पिता और उसने मुझे अपना **बच्चा** मान लिया। मेरे प्यारे सतगुरु 25 साल तक यही कहते रहे, ''परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं इंसान का बनना मुश्किल है क्योंकि परमात्मा इंसान की तलाश में है।''

परमपिता परमात्मा ने सभी आत्माओं का हिसाब अपने हाथ में रखा है। परमात्मा खुद ही फैसला करता है कि यह आत्मा इस जीवन में गुरु के पास आएगी या नहीं? इसे 'नामदान' मिलेगा या नहीं? नामदान मिलने के बाद क्या इसे गुरु पर विश्वास आएगा? परमात्मा खुद ही फैसला करता है कि यह आत्मा भजन-अभ्यास करेगी या नहीं? क्या यह अपनी मंजिल तक पहुँचेगी या नहीं? क्या इसे अपने से दूर रखा जाएगा, भक्ति नहीं करने दी जाएगी? इसे इस रास्ते पर लाना है या नहीं? ऐसी चुनी हुई आत्माऐं जिनमें उत्सुकता होती है जब उनका समय आता है वे गुरु से मिलती हैं या गुरु खुद ही ऐसी आत्मा के सामने आकर खड़ा हो जाता है।

प्यारेयो! कई बार हमें बहुत शर्म महसूस होती है क्योंकि शादी-शुदा होते हुए भी हम इस दुनियां में बह जाते हैं। हम व्याभिचार करते हैं और कहते हैं कि मन के कहने पर हमनें यह भूल की।

यह गरीब आत्मा जो आपके सामने बैठी है यह जिस जगह पैदा हुई वहाँ सभी दुनियावी सुविधाएं थी। यह गरीब आत्मा जब जवान हुई तो इसके पास भी मन था। जहाँ तक शादी का सवाल है मेरे माता-पिता ने शादी के लिए मुझे बहुत जोर दिया लेकिन जब मैंने उन्हें शादी के लिए मना किया तो उन्होंने कहा अगर तुम शादी नहीं करोगे तो हम कुएं में छलांग लगाकर अपनी जान दे देंगे। मैं उनका दिल नहीं तोड़ना चाहता था मैं उनके सामने रोया और मैंने उन्हें समझाया कि मैं शादी नहीं करना चाहता।

अपने प्यारे गुरु के मिलने से पहले मुझे ऐसा कोई आदमी नहीं मिला था जिसने मेरे प्यारे गुरु की बड़ाई या निन्दा की हो। मैं अपने गुरु के बारे में कुछ नहीं जानता था। मैं जब अपने गुरु से पहली बार मिला तो मैंने आपसे कहा, ''मैं अपनी माता के पेट से पैदा होने के बाद अभी तक कुँवारे जैसा पवित्र हूँ।''

प्यारेयो! परमात्मा की तलाश में मैं बहुत दिनों तक जमीन पर सोया, कई दिनों तक भूखा-प्यासा रहा। जब आपके दिल के अंदर बिछोड़े का दर्द होता है तो आप बुराई के बारे में कैसे सोच सकते हैं। आपकी यही इच्छा होती है कि किस दिन आप अपने प्यारे से मिलेंगे!

सन् 1947 में जिस समय पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में लड़ाई चल रही थी उस समय हमारी आर्मी लड़ाई में शामिल थी। उस लड़ाई के दौरान मुझे अपने देश की सेवा करने का मौका मिला। हम जिन पहाड़ो में लड़ाई लड़ रहे थे वहाँ बहुत बर्फ पड़ती थी। लड़ाई में कामयाब होने पर हमारे अच्छे काम के बदले में सरकार ने ईनाम के बदले हमें छह महीने की छुट्टियाँ दी, शिमला की पहाड़ियों में जानें का मौका दिया। यह सोचकर कि समतल इलाके में रहने की बजाय कुछ समय ठंडी जगह पर बिताना चाहिए क्योंकि हम लड़ाई के दौरान बहुत बर्फीले पहाड़ो पर रहे थे।

मैंने दूसरे लोगों की तरह पहाड़ो में रहकर छुट्टियां बिताने की बजाय समतल इलाके में रहना पसंद किया। जून के गर्म महीने में धूनियां तपाई। यह धूनियां मैंने पैसे इकट्ठे करने के लिए नहीं बल्कि इस आशा से तपाई थी कि शायद अपने शरीर को आग में जलाने से मेरा प्यारा मुझे मिल जाएगा!

मैं जानता था कि शरीर तपाने से या भूखा-प्यासा रहने से किसी को परमात्मा नहीं मिलता। मैंने ये सब क्रियाएं शरीर को इसलिए दी कि कहीं मेरा मन मुझे मेरे रास्ते से भटका न दे, कहीं मैं ऐसा न बन जाऊं कि दुनियावी सुखों में खो जाऊं?

जब मेरा अपने प्यारे से मिलने का समय आया उस समय मैं अपने घर पर था। उसने खुद ही संदेश भेजा कि मैं आ रहा हूँ। वह खुद ही मेरे पास आया क्योंकि मैं तो उसका नाम भी नहीं जानता था। उसने मेरे बचपन की प्यास बुझाई मेरी इच्छा पूरी की। बचपन से ही मेरी इच्छा थी कि मेरा दूल्हा आए और मुझसे शादी करे।

मेरी माता ने मुझे बताया था कि आदमी की शादी आदमी के साथ नहीं औरत के साथ होती है। मेरी इच्छा थी कि मैं परम पिता परमात्मा के साथ शादी करूंगा लेकिन वह कौन है? यह मैं नहीं जानता था। यह सच है कि वह एक दूल्हे की तरह आया, वह मेरे लिए कपड़े लाया, मुझे अंगूठी पहनाई और मेरे साथ शादी की। इस तरह उसने मेरी इच्छा पूरी की, मेरी जन्मों-जन्मों की प्यास बुझाई।

हिन्दुस्तान में यह रिवाज़ है कि जब किसी औरत की शादी होती है वह अपने पति के घर जाती है यह पति पर निर्भर है कि वह उसे किस नाम से बुलाए। इसमें औरत की अपनी कोई मर्जी नहीं होती वह सदा अपने पति की इच्छानुसार रहती है।

प्यारेयो जरा सोचें! एक आदमी जिसके लिए आपने पूरी ज़िंदगी इंतजार किया हो जिसे आप जानते भी न हों वह जब आपके पास आए और पहली ही मुलाकात में आपको बहुत मुश्किल इम्तिहान में डाल दे। मेरा प्यारा गुरु पहली बार जब मेरे पास आया तो वहाँ मेरे पास बहुत बड़ी जगह थी जिस पर बहुत बड़ा मकान बना हुआ था। उसने वह सारा मकान देखा और मुझसे कहा कि मैं यह जगह छोड़ दूं।

जिस तरह पप्पू यहाँ पर (साँपला) बहुत बड़े-बड़े मकान बनवा रहा है जिसमें से कुछ बन गए हैं और कुछ बन रहे हैं इसी तरह उस जगह पर कुछ मकान बन गए थे और कुछ बन रहे थे अगर मैं पप्पू से कहूँ कि इस जगह(साँपला) को छोड़ दे तो इसे दिल का दौरा पड़ जाएगा जबकि मैं पप्पू के साथ रहता हूँ लेकिन मैं तो अपने गुरु को पहले से जानता भी नहीं था।

जब मेरे गुरु ने मुझे वह जगह और वहाँ रखा सब कुछ छोड़ने के लिए कहा उस समय मेरे सिर पर साफा बंधा हुआ था। जब मैंने पगड़ी पहननी चाही तो मेरे गुरु ने पगड़ी उठाने के लिए भी मना किया। मैंने उसी समय वह जगह छोड़ दी और उसी दिन शाम को 16 पी.एस. चला गया जहाँ पर मैं अब रह रहा हूँ।

मेरे एक नज़दीकी प्रेमी ने एक बार मुझे सलाह दी कि हमें उस जगह से जाकर बर्तन ले आने चाहिए। मैंने उस प्रेमी से नाराज़ होकर कहा, ''क्या तुम्हें यहाँ खाना बर्तनों में नहीं मिलता? मेरे गुरु ने मुझसे जो कहा है मैंने वही करना है।''

मेरे एक रिश्तेदार ने जायदाद छोड़ने पर मुझसे विरोध करते हुए कहा, ''तुम अपनी जायदाद किस तरह छोड़ सकते हो?'' मैंने चुटकी बजाते हुए कहा, ''बिल्कुल इसी तरह क्योंकि मुझे जायदाद के साथ नहीं अपने गुरु के साथ लगाव है।''

आमतौर पर अगर गुरु ने अपने लिए झोपड़ी भी बनाई होती है तो गुरु के रहते ही हम उस जगह की तरफ देखते हैं और इंतजार करते हैं कि गुरु के जाने के बाद हम उस जगह के मालिक बन जाएं। गुरु के जाने के बाद हम लोग आपस में लड़ते हैं उस संपत्ति पर कब्जा करने के लिए कोर्ट कचहरी तक चले जाते हैं।

प्यारेयो! जब आपने गुरु के लिए अपना सब कुछ त्याग कर दिया है तो ही आप **गुरु के बच्चे** बन सकते हैं। आप ऐसा तभी कर सकते हैं जब आप चतुराई छोड़ दें और एक बच्चे की तरह मासूम बन जाएं अगर बच्चे के हाथ से खिलौना छीन लें तो वह कुछ नहीं कर सकता। जिस गुरु ने आपको सब कुछ दिया है अगर वह वापिस ले ले यह आप तभी बर्दाश्त कर सकते हैं जब आपमें चतुराई न हो, आप मासूम हों। **गुरु का बच्चा** बनना बहुत मुश्किल है।

मेरे प्यारे गुरु ने कभी मुझे अपने सामने नहीं बैठने दिया था आप सदा ही मुझे अपने साथ बिठाया करते थे। मुझे कई बार आपके

साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है; मुझे कई बार आपके साथ खाना खाने का, आपकी दाढ़ी से खेलने का और आपकी गोद में बैठने का मौका मिला है जिस तरह बच्चा अपने पिता की गोद में बैठता है। चतुराई की क्या बात है? उस समय मैं आधा पागल हुआ करता था मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ?

प्यारेयो! बच्चा दोस्त और दुश्मन में फर्क नहीं समझता उसके लिए रस्सी और साँप एक बराबर होते हैं। वह पूरी तरह से अपने माता-पिता की इच्छा के आधीन होता है और माता-पिता पर विश्वास करता है। हमारे गुरु के पास हजारों दुनियावी माता-पिता से भी ज्यादा प्यार है अगर हम खुद को पूरी तरह से गुरु की इच्छा के आधीन कर दें तो हम **गुरु के बच्चे** बन सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब कोई **गुरु का बच्चा** बन जाता है तो गुरु को भी कुछ देना पड़ता है। ऐसे बच्चे के लिए गुरु सच्चखंड से तोहफा लेकर आता है जिसे ब्रह्म और पारब्रह्म भी नहीं ले सकता। यहाँ तक की देश का मालिक जोत-निरंजन भी गुरु के दिए हुए तोहफे को नहीं छीन सकता।''

प्यारेयो! **गुरु का बच्चा** बनना बहुत ऊँची चीज़ है। मैं तो यह कहूँगा कि भाग्यशाली जीव ही ऐसी आशा कर सकता है।

एक प्रेमी : गुरु के पास माफी है लेकिन सन्त कहते हैं कि कुछ ऐसे भी पाप हैं जिनके लिए माफी नहीं दी जा सकती जैसे आत्महत्या करने वाले जीव को माफ नहीं किया जाता?

बाबा जी : हमें यह जीवन परम पिता परमात्मा ने दिया है। हमें यह शरीर पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब से मिला है अगर इस जन्म में हम गूँगे, बहरे या अंधे हैं चाहे हमारी बुद्धि अच्छी है या बुरी है चाहे हमारे शरीर में कोई कमी है या हमारा शरीर अच्छा और सुंदर है यह सब हमारे अपने ही कर्म हैं।

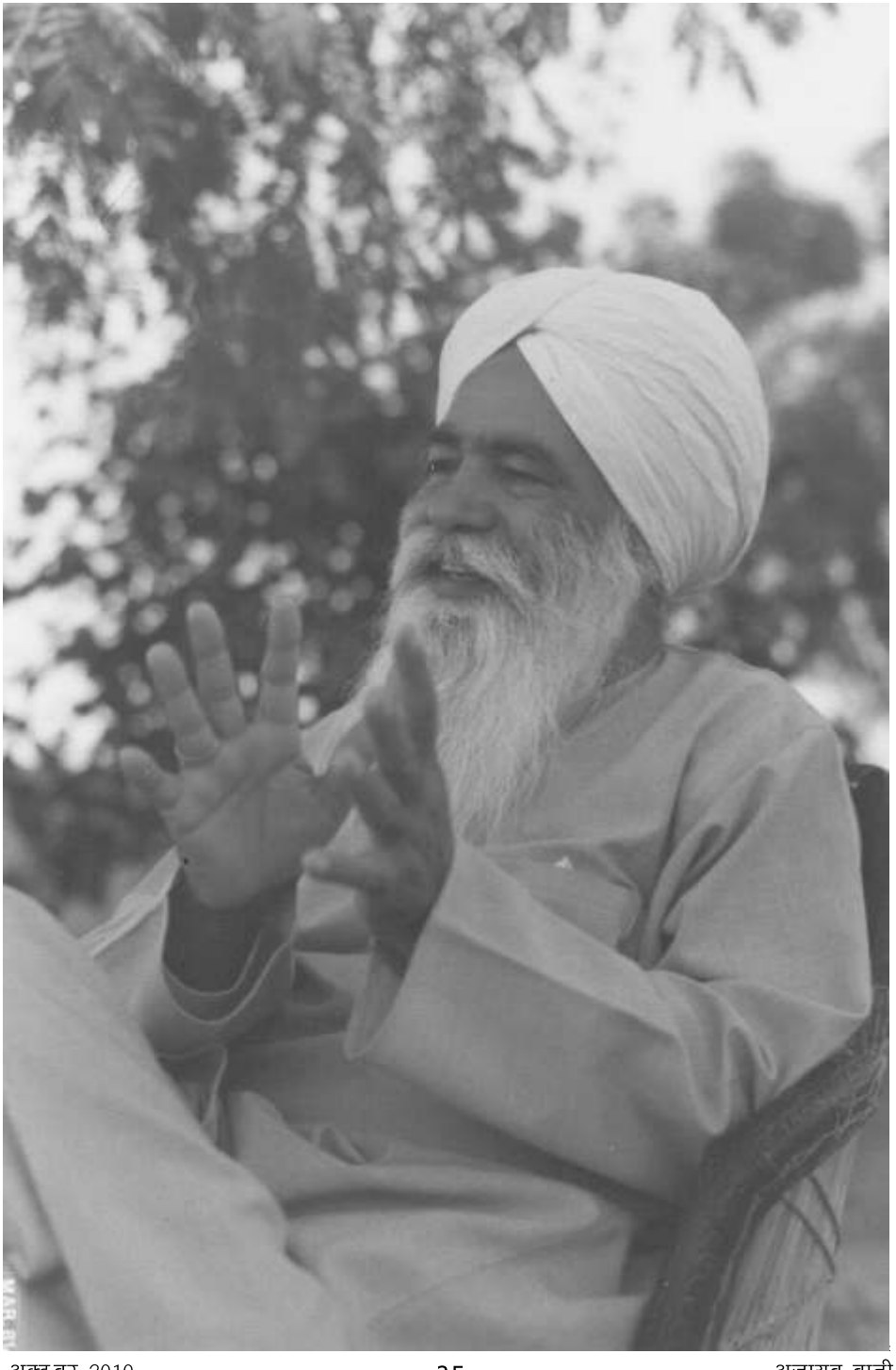

संसार में हमें अपने कर्मों के मुताबिक ही सब कुछ मिलता है। परमात्मा ने जन्म-मृत्यु का फैसला अपने हाथ में रखा है। वही यह फैसला करता है कि कितनी देर आत्मा को दुनियां में रहना है। जब हम आत्महत्या के बारे में सोचते हैं तो हम परमपिता परमात्मा की इच्छा को स्वीकार नहीं करते। सभी वेद-शास्त्र और धार्मिक ग्रन्थों का यह मत है कि आत्महत्या करने वाले को माफी नहीं दी जा सकती; आत्महत्या करने वाला बहुत बड़ा पापी है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पाप भी कई तरीके के होते हैं लेकिन आत्महत्या करना सबसे बड़ा पाप है। आत्महत्या करने वाले को परमात्मा माफ नहीं करता। आत्महत्या करने वाले को उल्टा लटका दिया जाता है उसे वहाँ बहुत सी सजाएं दी जाती हैं।''

आप जानते हैं कि इस दुनियां में भी अगर कोई अपना जीवन खत्म करना चाहता है तो उसे बहुत सख्त सजा भुगतनी पड़ती है जेल जाना पड़ता है। जब इस दुनियां का कानून आत्महत्या की कोशिश करने वाले को माफ नहीं करता तो परमात्मा का कानून भी नहीं बदलता। आत्मा की कमजोरी के कारण हम आत्महत्या के बारे में सोचते हैं, आत्महत्या करने से किसी मुसीबत का अंत नहीं होता। बहुत से लोग दुनियावी जिम्मेवारियों से घबराकर आत्महत्या करते हैं क्योंकि उनका मन कमजोर होता है और बहुत से लोग पागलपन के कारण आत्महत्या करते हैं।

एक प्रेमी : क्या आपने बाबा सोमनाथ या मस्ताना जी के साथ कुछ समय बिताया है? अगर आपने इनके साथ समय बिताया है तो क्या आप हमें इस बारे में कुछ बताना चाहेंगे?

बाबा जी : बाबा सोमनाथ के साथ मेरी एक बहुत छोटी सी मुलाकात हुई है। आप बाबा बिशनदास जी के बारे में जानते हैं कि आप मेरे पहले गुरु थे आपने मुझे 'दो-शब्द' का भेद दिया था। बाबा बिशनदास जी ने मुझसे कहा, ''इसके आगे कुछ और भी है अगर

तुम्हें कोई ऐसा गुरु मिले जो इससे ऊपर दे सकता हो तो मुझे भी ऐसे गुरु के पास ले चलना अगर मुझे कोई ऐसा मिलेगा तो मैं तुम्हें उसके पास ले जाऊंगा।''

मुझे महाराज कृपाल के मिलने से पहले महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों का मौका मिला। जब मैं महाराज सावन सिंह जी से मिला तो मुझे तसल्ली हो गई तब मैं बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन के पास लेकर गया। बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन को मेरे बारे में बताया कि परमात्मा की खोज में मैंने किस तरह धूनियां तपाई हैं और कई किस्म के अभ्यास किए हैं।

उस समय महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''यहाँ मेरा एक शिष्य है जिसने परमात्मा की खोज में इस तरह के बहुत से अभ्यास किए हुए हैं, वह जब यहाँ आया था तब उसके लम्बे बाल थे यहाँ ब्यास में आकर उसने बाल कटवा दिए।'' तब बाबा सोमनाथ को बुलवाया गया उस समय हम महाराज सावन सिंह जी के सामने मिले थे।

मुझे कई बार महाराज सावन सिंह जी के सतसंग के दौरान मस्ताना जी के साथ समय बिताने का मौका मिला है। आप मेरे बहुत अच्छे दोस्त थे, हमारा एक-दूसरे के प्रति बहुत प्यार था।

मस्ताना जी एक सच्चे प्रेमी थे। आप महाराज सावन सिंह जी को राजा कहते थे और श्वास-श्वास के साथ अपने गुरु सावन को याद करते थे। आप मस्ताना जी के लिखे हुए जो भजन गाते हैं वह मेरे ही लिखे हुए हैं। मस्ताना जी के चोला छोड़ने के बाद किसी और आदमी ने उन भजनों के अंत में अपना नाम लिखना शुरू कर दिया था कि ये भजन उसके लिखे हुए हैं जोकि मुझे अच्छा नहीं लगा इसलिए हमने मस्ताना जी का नाम लिखा है।

मस्ताना जी अपने पैरों में घुंघरूओं की पाजेब पहनकर महाराज सावन सिंह जी के सामने नाचते थे। उन दिनों मुझे भी नाचने का शौक था मैंने उसी भाव से यह भजन लिखा थाः

नाच रे मन नाच रे तू सतगुरु आगे नाच रे
धन सतगुरु को बोलिए तेरा कटे जन्म का पाप रे।

महाराज सावन सिंह जी के सामने खड़े होकर मैंने कहा, ''जिस तरह रांझा कहा करता था कि वे लोग मेरे साथ आ जाएं जो फकीर बनना चाहते हैं न मेरी शादी हुई है न मेरी शादी होगी और दुनियां में ऐसा कोई नहीं जो मेरे मरने पर रोऐगा।''

जिस तरह महाराज कृपाल सिंह जी ने मुझे जमीन के नीचे गुफा में भजन-अभ्यास के लिए बिठाया था उसी तरह महाराज सावन ने मस्ताना जी के लिए गुफा बनाकर उनसे भजन-अभ्यास करवाया। मुझे भी उस गुफा में भजन-अभ्यास करने का मौका मिला है।

प्यारेयो! जब मस्ताना जी ने 'नामदान' देना शुरू किया उस समय उनकी बहुत संगत थी लेकिन उनका मेरे साथ वैसा ही प्यार था जैसा महाराज सावन सिंह जी के दरबार में हुआ करता था। मैं जब भी मस्ताना जी से मिलने जाता तब वह सारी संगत के सामने मुझसे बुलवाते कि बताओ! महाराज सावन सिंह जी कैसे थे? तब मैं सारी संगत के सामने महाराज सावन सिंह जी सुंदरता और यश के बारे में बताता जैसा मैंने उन्हें देखा था।

महाराज सावन सिंह जी बहुत खूबसूरत थे। आप एक सभ्य गुरु थे। आपकी घड़ी में सोने की चेन लगी हुई थी। आप साफ-सुथरे कपड़े पहनते थे कभी किसी ने आपके कपड़ो पर कोई दाग लगा हुआ नहीं देखा था। आप जब हँसते तो ऐसा लगता था कि सब हँस रहे हैं। आप इतने सुंदर थे कि परियां भी आपकी पूजा करती थी। आपके बात करने का तरीका ऐसा था कि आप बात किसी से करते और दूसरा सुनने वाला अपने पापों को समझकर काँपता था।

मस्ताना जी कहा करते थे, ''आप यहाँ जो कुछ देख रहे हैं यह सब महाराज सावन की दया है।'' मस्ताना जी लोगों को पैसे बाँटा करते थे जिस दिन वह ऐसा करते सुबह से लेकर रात तक पैसे बाँटते

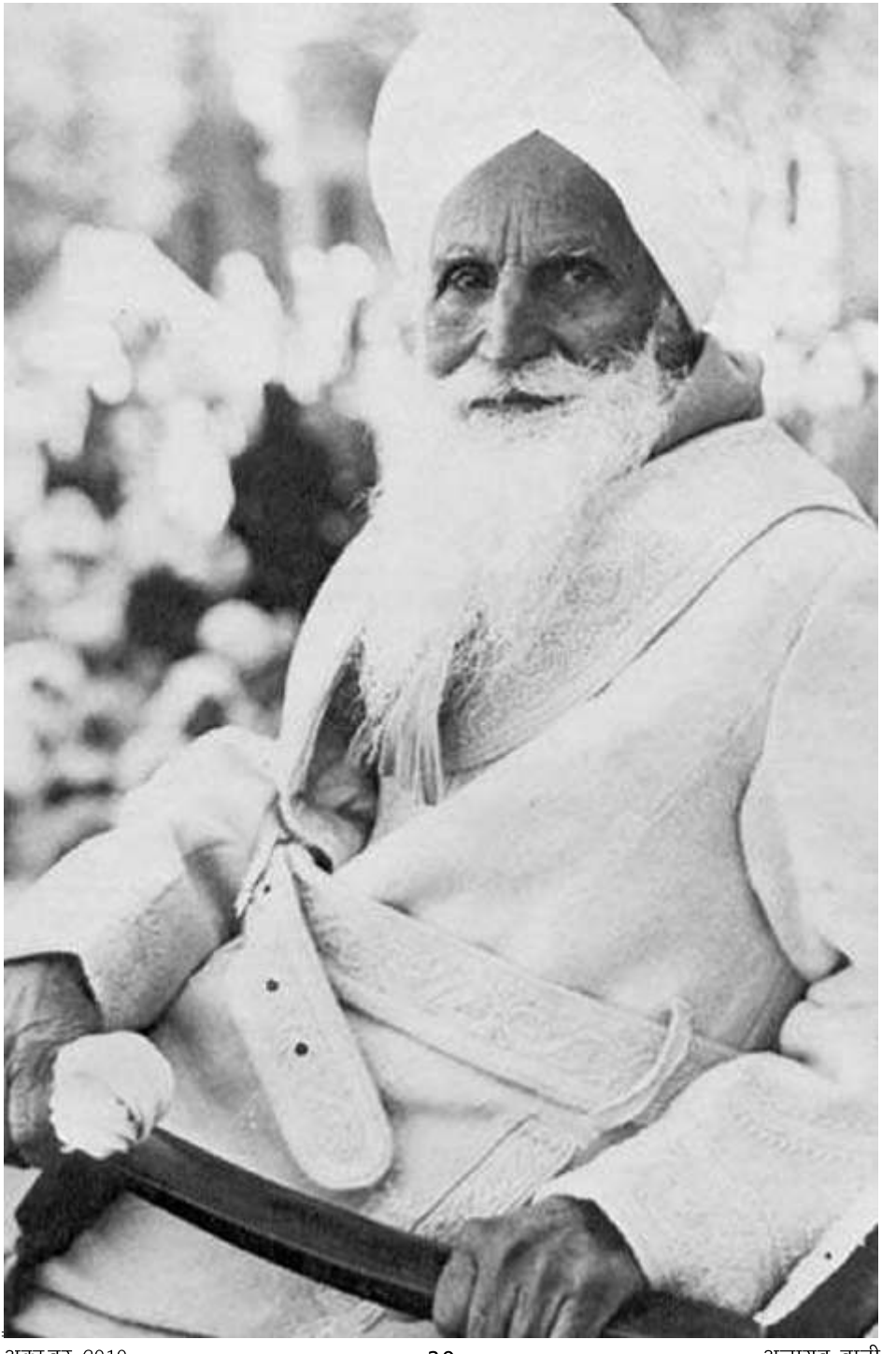

रहते। कई बार सरकार ने यह जानने की कोशिश की कि पैसे कहाँ से आते हैं। एक बार सरकार ने आपको जेल में भी डाला लेकिन यह मालूम नहीं हो सका कि बाँटने के लिए पैसे कहाँ से आते हैं। आप यही कहते थे कि यह सब महाराज सावन की दया है।

आपने एक जगह यह भी लिखा है अगर किसी ने मस्ताना को एक रूपया दिया है तो वह उसके बदले में हजार रूपये ले सकता है। आप हमेशा फटे-पुराने कपड़े पहनते थे। मैंने देखा है कि आप जूते भी फटे हुए पहनते थे। आप फटे हुए कपड़े और जूते दिखाकर कहते, ''यह महाराज सावन सिंह जी का खेल है गरीब मस्ताना के पास फटे हुए कपड़े और इन जूतों के सिवाय कुछ नहीं।''

एक दिन मस्ताना जी ने बहुत प्यार से मुझसे कहा, ''मुझ पर महाराज सावन सिंह जी की दया है लेकिन जो ताकत तेरे पास आएगी उसने बहुत भजन-अभ्यास किया है। सावन सिंह जी परम पिता परमात्मा हैं और वह परमात्मा का बेटा है। उसने इतना भजन-अभ्यास किया है अगर वह अपने दोनों हाथ खड़े कर दे तो आग उगलती हुई तोपें भी रूक जाएंगी। वक्त आने पर वह ताकत तुम्हारे घर आएगी तुमने उसका आदर करना है।''

मस्ताना जी आमतौर पर सावन सिंह महाराज के नामलेवाओं से खुश नहीं होते थे। आप कहते थे कि सावन के रूप में आपको परमात्मा मिला है लेकिन आप उसकी कद्र नहीं करते। सावन शाह का रूप आपके अंदर इतना गहरा समाया हुआ था कि आप उसे भूल नहीं सकते थे। जैसा कि मैंने अपने एक भजन में लिखा हैः

जद दा सावन नजरी आया, पलकां विच लुकाया,
अजे तक ना भुल ही सकया, ज्यों सावन मुस्काया,
सावन प्यारा, सावन सोहणा सावन दिलबर जानी,
हसदा हसदा दे गया मैंनू, कृपाल अमर निशानी।

मैंने कभी अपने प्यारे गुरु कृपाल और महाराज सावन में कोई फर्क महसूस नहीं किया।

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''मेरे दिल के अंदर प्रीतम को छोड़कर और कोई ख्याल नहीं समा सकता। दोनों आलम मेरे दुश्मनों को दे दें क्योंकि मेरे लिए तो मेरा प्रीतम ही काफी है। प्रेमी के अंदर प्रीतम को छोड़कर और किसी के लिए जगह नहीं रहती, वह प्रीतम के साथ जुड़ा रहना चाहता है।'' कबीर साहब फरमाते हैः

कबीर रेख संदूर और काजल दिया न जाए।
नैनी प्रीतम मिल रहा दूजा कहाँ समाए।
आठ पहर चौंसठ घड़ी मेरे और न होय।
नैना माहीं तू वसे नींद को ठौर न होय।
पतिव्रता तब जानिए रत्यो न उघरे नैन।
अंतरगत सुकच्ची रहे बोले मुदरे बैन।

प्रीतम मेरी आँखों में काजल की रेत की तरह रम रहा है। आठों पहर प्रीतम की याद के बिना और कोई काम नहीं वह आँखों में बस रहा है तो नींद को जगह कहाँ? सच्ची पवित्रता तो वह है जो अपने पति को दी हुई आँखों से एक पल के लिए भी किसी दूसरे को नहीं देखती। वह आँखों को बंद करके उसकी याद के रस में डूबी रहती है और **प्रेम** की मस्ती में हर समय गुलाब के फूल की तरह खिली रहती है और मीठे वचन बोलती है।

मालिक के ऐसे भक्तजन जब मालिक की प्रेमभरी चर्चा करते हैं तो **प्रेम** के आनन्दमयी उछालों की वजह से उनका गला रूक जाता है, रोम खड़े हो जाते हैं और आँखों से आँसुओं के मोती निकलने लगते हैं। जब प्रीतम पास हो तो प्रीतम का प्रेम रस बनाकर रखने के लिए प्रेमी लंबी रातें माँगता है। वह सोचता है अगर रात खत्म हो जाएगी

तो बना हुआ रस टूट जाएगा। वह मिन्नतें करता है कि ऐसी रातें लंबी हो जाएं और प्रीतम के साथ विछोड़ा न हो। वह थोड़ी नींद माँगता है ताकि प्रीतम के चरणों से दूर न हो।

वद सुख रैनणिए पिर प्रेम लग्गा।
घट दुख नींदणिए पिर स्यों सदा पग्गा।

ऐसे प्रेमी जिस कुल में जन्म लेते हैं वह कुल भी पवित्र हो जाती है। प्रेमी मालिक का रंग लेकर आलौकिक ताकतों का मालिक बन जाता है। प्रेमी का मन समुद्र की तरह थिर और गंभीर होता है। उसके अंदर ख्यालों के तूफान नहीं उठते, उसके ध्यान में प्रीतम की धुन समाई रहती है।

जब हम **प्रेम** करते हैं तो प्रेम हमारी आत्मा का आधार बन जाता है, हमारा सारा ख्याल प्रीतम पर एकाग्र हो जाता है। सारी जिंदगी की एक गांठ बंध जाती है। रूह के सब जमीनी बंधन कट जाते हैं और वह आजाद होकर अधरपुर उड़कर जाती है जो उसका असल मुकाम है, वहाँ सदा का आनन्द पाती है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

तेरा धाम अधर में प्यारी तू धर संग रहत बंधानी।

प्रेम स्थूल बंधनों से ऊपर सूक्ष्म और रूहानी मंडलों में ले जाता है और रूह के कतरे को मालिक रूपी समुद्र में मिला देता है फिर प्रेमी आम आदमी नहीं रहता, वह आलौकिक ताकतों के भंडार का मालिक बन जाता है। प्रेम मामूली जीवों को रूहानी बादशाह बना देता

है। प्रेमियों के पास इतनी शक्ति है कि वे बैकुठ को भी **प्रेम** के चाबुक मारकर तार सकते हैं। कबीर साहब फरमाते हैंः

चल रे बैकुंठ तुझे ले तारो, हिच हित प्रेम के चाबुक मारो।

प्रेमी के अंदर विरह जाग उठती है उसकी वृति हर समय प्रीतम की तरफ लगी रहती है। **प्रेम** की धरती का यह एक खास गुण है कि इसमें प्यार का बीज बीजो तो उसमें से गम, सोज और फिराक की खेती उग जाती है। प्रेमी कभी दिल से गिला करता है कि यह दिल क्यों किसी पर आ गया! कभी आँखों को कोसता है कि ये क्यों किसी से लग गई! चाहे उसने जो कुछ भी देखा वह आँखें चुराकर ही देखता है

जो आदमी उसके दिल का हाल नहीं जानता उसे दिल का हाल नहीं बताता क्योंकि बेदर्दों से दिली दर्द का हाल कहना एक नया दर्द सहेड़ना है। उसकी आँख जहाँ भी जाती है वह प्रीतम को अपनी नजर में रखता है।

खुसरो साहब फरमाते हैं, ''मैं ईश्क में काफिर हो चुका हूँ मुझे जाहरी मुसलमानी की जरूरत नहीं। मेरी रग-रग ईश्क में तार-तार होकर खस्ता हो चुकी है। प्रेमियों को कयामत से कोई गर्ज नहीं होती। प्रेमियों का काम केवल प्रीतम का जमाल तमाशा देखते रहना ही होता है।'' तुलसी साहब फरमाते हैंः

जागन में सोवन करे सोवन में लिव लाए।
सुरत डोर लागी रहे तार टूट न जाए।
तुलसी ऐसी प्रीत कर जैसे चंद चकोर।
चूंच झुकी गर्दन गली चितवे वाही ओर।

प्रेमी जागते हुए दुनियां की तरफ से सोया हुआ होता है। जागते और सोते हुए उसकी सुरत की डोर प्रीतम की तरफ लगी रहती है, वह तार कभी नहीं टूटती। उसकी प्रीत चाँद और चकोर की तरह होती है। गर्दन उल्टकर झुक जाती है पर एकटक नज़र लगाए रखता है। उसे न दिन का पता है न रात का पता है। वह दिन-रात अपने प्रीतम की लगन

में लगा रहता है। प्रेमी वह कर दिखाते हैं जो बड़े-बड़े होशियारों और अक्लमंदो से कभी नहीं हो सकता। दुनियावालों की रातें उनके दिन बन जाते हैं, वे प्रीतम की याद में रातें जागते हैं। प्रीतम के चेहरे के मुश्ताखों को आसमान की गर्दिशें भी प्रीतम से नहीं हटा सकती।

प्रेमियों का दिल-दिमाग तो प्रीतम की याद में गर्त होता ही है उन्हें तो अपने तन-बदन की भी खबर नहीं होती। वे प्रीतम के ध्यान में अपने आपको गँवा चुके होते हैं, प्रीतम के साथ दिल लगाने के कारण उन्हें सब्र और करार नहीं रहता। उन्हें बाहर के जमाने की गर्दिशें, गरीबी, भूख और नंग की खबर कहाँ?

शेख शादी जी फरमाते हैं, ''प्रेमी के दिल में सब्र नहीं होता जिस तरह छाननी में पानी नहीं रूकता। चाहे सारा जहान उल्ट-पुल्ट हो जाए उसे कोई परवाह नहीं। प्रेमी प्रीतम का दिवाना है उसकी मस्ती में मग्न है वह तन के प्याले को तोड़ चुका होता है। वह तो अक्ल के गुलजारों से दूर जा चुका होता है, **प्रेम** में इतना मस्त हो चुका होता है कि उसकी आँखों से मस्ती की शराब चो-चोकर बाहर आती है।''

शम्स तबरेज साहब मालिक के प्रेमी की मस्ती की हालत बयान करते हुए फरमाते हैं, ''हमें ऊँटो की कतारें और उनके सारबान मस्त नजर आते हैं। अमीर, गरीब और गैर सभी लोग मस्त नजर आते हैं। हे आसमान! मिट्टी, पानी, हवा और अग्नि भी मस्त हो गई है। बाहर तो ऐसी सूरत बन चुकी है कि तू हमारे अंदर का हाल न पूछ।

नब्ज, अक्ल और रूह भी मस्त हो गई है और उसने हमेशा की मस्ती को पा लिया है। इन पेड़ों की जड़े गुप्त शराब पी रही हैं। तू कुछ दिन सब्र कर, तू अपनी मस्ती में जाग उठेगा। हमारे दिल के अंदर एक जश्न बना पड़ा है तू हक के ईश्क की शराब का असर देख कि दर्द और दीवार तक मस्त हो गए हैं।''

शेष अगले अंक में .....

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम

5 जनवरी से 9 जनवरी 2011